Date 7/7/20 B.A. Part - I
Paper - I
Lecture - 37
Dr. Sunita Kumari
Assistant Professor
Marwari College Darbhanga

TOPIC सामाजिक स्तरीकरण की आवश्यकता

समाज अपने सदस्यों की कुशलता और योग्यता में वृद्धि करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते रहता है अगर सभी व्यक्तियों को समान स्थितियां प्रदान कर दी जाए तो इस दशा में कुछ व्यक्ति अपनी योग्यता से अधिक पुरस्कार प्राप्त कर लेंगे जबकि कुछ व्यक्तियों की योग्यता तथा कुशलता कम होने लगेगी क्योंकि उन्हें अपनी योग्यता के अनुसार विभिन्न प्रेरणाएं नहीं मिल सकेगी। इस तरह दोनों ओर से समाज का सन्तुलन बिगड़ जाने की सम्भावना हो सकती है।

अतः समाज विभिन्न व्यक्तियों को भिन्न-भिन्न सामाजिक पद प्रदान करके सामाजिक व्यवस्था को संतुलित

Scanned with CamScanner

बनाए रखने का प्रयत्न करता है।

डेविस के अनुसार "सामाजिक असमानता अचेतन रूप से विकसित एक विधि है जिसके द्वारा समाज अपने सदस्यों को यह विश्वास दिलाता है कि सबसे अधिक महत्वपूर्ण पदों पर सबसे अधिक योग्य व्यक्ति ही कार्य कर रहे हैं।" यह स्थिति तभी सम्भव है जब प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यतानुसार कार्य करने का अवसर मिले।

समाजीकरण के चरण

समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो कभी समाप्त नहीं होती है ऐसा समझना सर्वथा भूल होगी कि समाजीकरण अर्थात सामाजिक सीखने की प्रक्रिया सिर्फ बचपनावस्था में ही होती है क्योंकि यह प्रक्रिया काफी लम्बी होती है। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों ने समाजीकरण को कई चरणों में विभक्त कर दिया

का प्रयास किया है। पारसन्स ने इस पर काफी विस्तार से चर्चा की है उन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर जॉनसन ने चार स्तरों की चर्चा की है —

1. मौखिक स्तर
2. गुद स्तर
3. मातृरति स्तर
4. किशोरावस्था।

इन सभी अवस्थाओं का वर्णन इस प्रकार से किया जा सकता है —

मौखिक स्तर (The oral stage) — यह अवस्था जन्म से प्रारम्भ होकर एक साल की उम्र तक की होती है। जिस समय बच्चा जन्म लेता है उसी क्षण से उसे बहुत प्रकार की परेशानियां एवं असुविधाओं का सामना करना पड़ता है। वह अपनी संवेदनाओं को रो-चिल्ला कर मुँह के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। भाषा के अभाव में वह चेहरे के हाव-भाव एवं हाथ पैर चलाने के अलावा अपनी संवेदनाओं को प्रकट करने का उसके पास कोई दूसरा माध्यम ही नहीं होता है। यही समाजीकरण के प्रथम सोपान की स्थिति है।